विवादास्पद फ्लू अध्ययन को प्रकाशन की अनुमति

यूएस की एक जैव सुरक्षा समिति ने बर्ड फ्लू सम्बंधी दो अध्ययनों के पूर्ण रूप में प्रकाशन की अनुमति प्रदान कर दी है। गौरतलब है कि दिसंबर 2011 में यूएस के राष्ट्रीय जैव सुरक्षा सलाहकार मंडल ने कहा था कि एच5एन1 फ्लू वायरस की फेरेट्स (एक स्तनधारी जीव) में प्रसार क्षमता को लेकर किए गए दो अध्ययनों को पूरा प्रकाशित नहीं किया जाना चाहिए क्योंकि ये जैव आतंकवाद को बढ़ावा दे सकते हैं। इसके अलावा एक डर यह भी व्यक्त किया गया था कि उक्त वायरस प्रयोगशाला से बाहर गए तो खतरा पैदा कर सकते हैं।

पिछले दिनों खबर आई थी कि कुछ प्रयोगशालाओं में बर्ड फ्लू वायरस की नवीन उत्परिवर्तित किस्में तैयार की गई हैं जो इन्सानों को संक्रमित कर सकती हैं। इसे लेकर काफी बवाल मचा था कि इन वायरसों का दुरुपयोग हो सकता है। उस समय जारी वक्तव्य में वैज्ञानिकों ने अनुसंधान सम्बंधी अपनी स्थिति स्पष्ट करते हुए 60 दिनों के लिए इस तरह के अनुसंधान पर रोक लगाई थी।

इंफ्लुएंज़ा की वैश्विक महामारी का खतरा जन स्वास्थ्य के लिए एक बड़ी चुनौती है। यह जानी-मानी बात है कि इंफ्लुएंज़ा महामारियां ऐसे वायरसों से फैलती हैं जो पक्षी और सूअर जैसे जंतुओं में विकसित हुए हैं। ये वायरस ऐसे जिनेटिक परिवर्तन हासिल कर सकते हैं जो इन्सानों को संक्रमित करने की उनकी क्षमता बढ़ा देते हैं। एक प्रमुख समस्या यह है कि हम नहीं जानते कि वह क्या चीज़ है जो इन वायरसों में इन्सानों को संक्रमित करने की क्षमता पैदा कर देती है। हाल के शोध के दौरान एच5एन1 वायरसों द्वारा फेरेट्स में प्रसार के कुछ निर्धारक लक्षणों की पहचान हो पाई है।

अब राष्ट्रीय जैव सुरक्षा मंडल ने उक्त अनुसंधान की रिपोर्ट प्रकाशित करने की अनुमति देते हुए कहा है कि वह इस बात का पक्षधर है कि अनुसंधान सम्बंधी सारी जानकारी का खुला आदान-प्रदान होना चाहिए जब तक कि वह जन स्वास्थ्य के लिए कोई प्रत्यक्ष खतरा न पैदा करती हो। ***(स्रोत फीचर्स)***